शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

मालवा प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों में प्रदूषण संबंधी समस्याएँ

अणिमा ओझा (शोधार्थी)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

संक्षेप

स्वस्थ्य पर्यावरण चाहे वह प्राकृतिक हो या मानवीकृत, पर्यटन के लिए एक आधारभूत संरचना है। परन्तु उन स्थलों पर पर्यटन के प्रारंभ होते ही वे बिगड़ने लगते हैं, क्योंकि पर्यटकों की सुविधा को ही प्राथमिकता दी जाती है। जिसके फलस्वरूप अधिकांश पर्यटन स्थलों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगता है। पर्यटकों द्वारा फेंका गया कूड़ा-करकट, पर्यटकों की भीड-भाड़, शोर-शराबे से रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड के आस-पास व्याप्त गन्दगी, वाहनों से निकलते विषैले धुंए से पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल अपना सौन्दर्य खोते जा रहे हैं। अतः पर्यटन के बढ़ते चरण तथा पर्यावरण व प्रदूषण संबंधी समस्याओं के ह्रास से बचने के लिए पारिस्थितिकी पर्यटन को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : पारिस्थितिकी पर्यटन, पर्यटक, प्रदूषण समस्या

परिचय

मालवा प्रदेश में पर्यटन विकास की अपार संभावनाओं के होते हुए भी क्षेत्र में स्थित दर्शनीय स्थल को पर्यटन केन्द्र के रूप में वह पहचान नहीं मिल पाई है जो अन्य राज्यों के पर्यटन केन्द्रों को प्राप्त है। जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, गोवा आदि ऐसे राज्य है जहां पर्यटन को उद्योग की श्रेणी में रखते हुए विकास किया जा रहा है। वहीं मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास की ओर ध्यान कम दिया जा रहा है। जिस गति से अन्य राज्य विकास कर रहे है, मध्यप्रदेश इसमें पिछड गया है। यहाँ पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं तो हैं, किन्तु इन केन्द्रों के विकास के लिये न तो पर्यटन विभाग ने ही ध्यान दिया और न ही स्थानीय प्रशासन ने कोई ठोस कदम उठाये, जिससे इन पर्यटन केन्द्रों का विकास हो सके। पर्यटन केन्द्रों पर प्रदूषण रहित वातावरण उस स्थल को और भी रमणीय बनाता है, परन्तु स्वच्छता के अभाव में पर्यटन स्थल अपना सौन्दर्य को खोते जा रहे हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों के आस-पास व्याप्त गंदगी, कूड-करकट, मलबे के ढ़ेर व वाहनों से निकलने वाला धुंआ किसी भी पर्यटक को विचलित करने के लिए प्रर्याप्त है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रदूषण जनित समस्याओं का अध्ययन करना है, ताकि

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

पर्यावरण एवं पर्यटन में सामंजस्य रखकर मालवा प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों को विकसित किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन हेतु मालवा प्रदेश का चयन किया गया है जो मध्यप्रदेश की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है, जिसके अंतर्गत राज्य के 16 जिले सम्मिलित हैं, यथा - नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, शाजापुर, राजगढ, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, देवास, सीहोर, रायसेन, विदिशा, गुना तथा सागर। इसका भौगोलिक विस्तार 21054' उत्तरी अक्षांश से 23030' उत्तरी अक्षांश तक एवं 74024' पूर्वी देशांतर से 78029' पूर्वी देशांतर के मध्य तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 105450 वर्ग कि.मी. है।

आंकड़ो का स्रोत एवं विधि तंत्र

क्षेत्र के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों के अध्ययन हेतु आंकड़ों को दो माध्यमों से संगृहीत किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के अंतर्गत व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा जहां वर्ष 2011 व 2012 के मध्य चयनित पर्यटन केन्द्रों पर प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से पर्यटकों के कार्यात्मक व व्यावहारिक आंकड़े प्राप्त किए गए। वहीं द्वितीयक आंकड़ों के अन्तर्गत प्रकाशित स्रोतों तथा पर्यावरण व पर्यटन संबंधित पत्रिकाएं, पर्यटन कार्यालय, इंटरनेट आदि से प्राप्त किए गए है।

प्रदूषण एवं स्वच्छता संबंधी समस्याएं

पर्यटकों द्वारा फेंका गया कूडा करकट हो या कचरों का ढेर, वाहनों से निकलने वाला धुँआ हो या पर्यटकों की भीड, इन सभी क्रियाओं से पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल के रमणीय केन्द्रों पर विपरित प्रभाव पडा है। क्षेत्र के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों पर कचरा निष्कासन एक प्रमुख समस्या है, क्योंकि नगरों, महानगरों आदि से निकलने वाले कचरे को घाटियों या पहाडों पर यूं ही फेंक दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप ये प्राकृतिक स्थल अपना वास्तविक स्वरूप खोते जा रहे हैं और धीरे-धीरे वहां पर कचरे का ढेर बढता जा रहा है। जैसे इन्दौर के समीप स्थित जानापाव कुटी, वन विहार, गांधी सागर, प्राकृतिक उद्यान के आस-पास के स्थलों पर ये समस्याएँ सर्वाधिक परिलक्षित हुई हैं। अत्यधिक पर्यटकों के आगमन से ग्रामीण शान्त वातावरण चहल-पहल से भर जाता है और पर्यटन केन्द्रों पर वायु, जल, ध्वनि, प्रदूषण और स्वच्छता से संबधित समस्याएं प्रबल होती जा रही हैं। जैसे मांडू, भीमबेटका, सांची, विदिशा, चंदेरी आदि पर्यटन केन्द्रों पर अत्यधिक पर्यटन से जहां स्थानीय संसाधनों पर दबाव बढता जा रहा है वहीं हजारों पर्यटकों की श्वास की गर्मी मात्र से गुफाओं की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

पुरानी अनमोल चित्रकारी भी नष्ट होने लगी है। जैसे भानपुरा में स्थित गुफाएं, बाघ की गुफाएं, उदयपुरा की गुफाएं आदि। अतः क्षेत्र में आए 30 प्रतिशत पर्यटकों के अनुसार लगभग सभी पर्यटन केन्द्रों पर स्वच्छता एवं प्रदूषण जनित समस्याएँ प्रबल थीं। पारिस्थितिकी पर्यटन केंद्र में आये केवल 38 प्रतिशत देशी व 24 प्रतिशत विदेशी पर्यटक¨ के अनुसार पर्यटन केंद्र पर स्वच्छता का स्तर बेहतर था, जबकी 53 प्रतिशत देशी व 61 प्रतिशत विदेशत पर्यटकों के अनुसार स्वच्छता का स्तर बुरा था।

मालवा : पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों पर स्वच्छता का स्तर

स्थल	अच्छा		बुरा		दयनीय	
प्रतिशत में	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी	देशी	विदेशी
रेलवे स्टेशन	35	23	57	67	8	10
बस टर्मिनल	23	11	59	69	18	20
होटल	67	63	33	33	-	04
रेसटोरेंट	38	19	55	62	7	19
पारिस्थिति की पर्यटन स्थल	27	13	61	67	12	20
प्राकृतिक उद्यान	42	15	55	68	03	17

स्रोत - क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011-2012

मालवा : पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों पर प्रदूषण रहित, स्वच्छता से संतुष्ट/असंतुष्ट पर्यटक(प्रतिशत में)

	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
संतुष्ट पर्यटक	29	12
असंतुष्ट पर्यटक	71	88

स्रोत - क्षेत्र सर्वेक्षण वर्ष 2011-2012

उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में स्वच्छता की दृष्टि से प्रायः सभी पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों में असंतोष व्याप्त है। केन्द्र में आए लगभग 71 प्रतिशत देशी एवम् 88 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों के अनुसार पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों में स्वच्छता का अभाव था। पारिस्थितिकी पर्यटन का महत्वपूर्ण पक्ष स्वच्छता है। परन्तु अध्ययन क्षेत्र में व्याप्त प्रदूषण जनित समस्याएं जैसे रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड के आस-पास व्याप्त गंदगी, मलबा का ढेर, वाहनों से निकले विषैले धुंए, पर्यटकों की भीड़ एंव शोर-गुल व उनके द्वारा फेंका गया कूडे-करकट से पर्यटन स्थल अपना सौन्दर्य खोते जा रहे हैं। जैसे-

1 वाहनो से निकलने वाले विषैले धुएं से पुरातात्विक गुफाओं में जो भित्तिचित्र हैं, वे अपनी मौलिकता को खोते जा रहे हैं। जैसे बाघ की गुफाएं, भानपुरा तहसील में स्थित गुफाएं आदि।

2 उदयगिरि गुफा से मात्र 25 मी. दूरी पर लोक-निर्माण विभाग द्वारा सड़क निर्माण किया गया है, जिससे यहाँ गुजरने वाले वाहनों के प्रदूषण व कंपन से इन गुफाओं के समक्ष खतरा पैदा हो गया है।

3 सांची, भोजपुर, विदिशा, उज्जैन, मांडू, चंदेरी, मंदसौर आदि पर्यटन केन्द्रों पर व्याप्त कचरे के ढेर से ये रमणीय स्थल कुरूप होते जा रहे हैं। ठोस अपशिष्ट निष्पादन की समस्याओं से प्रायः सभी पर्यटन स्थल ग्रस्त हैं।

4 राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्यों में पर्यटकों द्वारा फेंका गया कूडा-करकट जिसमें प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें आदि प्रमुख होती है, जिनका पुनः चक्रण नहीं हो पाता। अतः उनकी निष्पादन की

समस्या एक गंभीर समस्या के रूप में सामने आई है।

सुझाव

प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों में प्रदूषण संबंधित समस्याओं के निवारण हेतु निम्न सुझाव इस प्रकार हैं -

1 मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों पर फैली गंदगी को देखते हुए यह आवश्यक है कि पर्यटन स्थलों के पूरे क्षेत्र की सफाई की जाए। पोलीथिन बैग के उपयोग के विरूद्ध नियमों का कड़ाई से पालन हो। पर्यावरण की दृष्टि से स्वीकृत मानदंड़ों पर भवन निर्माण की स्वीकृति दी जाए और वातावरण की शुद्धता के लिए खाली स्थानों पर वृक्षारोपण किया जाए।

2 प्राकृतिक पर्यटन स्थलों व अभ्यारण्यों के आस-पास वाहन की गति किसी भी प्रकार 35 कि.मी. प्रति घंटा से अधिक न हो और न ही किसी प्रकार का ध्वनि प्रदूषण होना चाहिए।

3 प्राकृतिक उद्यान के आस-पास कचरा न फ़ैलाने दें, बल्कि इसके लिए निश्चित जगह या कचरा पेटी का इस्तेमाल करें या अपना कचरा अपने साथ तब तक रखें जब तक उसे फेंकने हेतु उचित स्थान न मिले।

4 प्लास्टिक से बनी चीजें यथा - थैली, बोतल, गिलास, कप आदि को प्राकृतिक उद्यान के भीतर न ले जायें। प्लास्टिक और ऐसी चीजों का उपयोग न करें जो प्रकृति और जानवरों के लिए नुकसानदायक हो।

5 जलीय जीवन व अभयारण्यों में विचरते वन्य जीवों पर न तो पत्थर फेंके और न ही उन्हें खाद्य सामग्री दें।

6 सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनें और स्थानीय रिवाजों का सम्मान करें। ऐसे कपड़े पहनें जो स्थानीय संस्कृति के अनुरूप हों।

7 ऐतिहासिक इमारतों व धार्मिक भवनों के ऊपर अपना नाम या कोई भी अश्लील शब्द न अंकित करें।

निष्कर्ष

अत्यधिक पर्यटन किसी भी स्थान के संसाधनों का दोहन तो करता ही है साथ ही ध्वनि, वायु, जल प्रदूषण भी फैलाता है। शहरीकरण व औद्यौगिकरण के पश्चात शहरों व उद्योगों से निकलने वाले अपषिष्ट पदार्थो को प्राकृतिक केन्द्रों यथा- गुफाओं, किलों, नदियों, झीलों, तालाबों, के आस पास निष्कासित किया जाता है। जिससे ये प्राकृतिक रमणीय स्थल अपना वास्तविक रूप को खोते जा रहे हैं। कजलीगढ, धार किला, बाघ, भोजपुर, रायसेन किला, केदारेश्वर कुण्ड, जानापाव कुटी, के आस-पास व्याप्त कचरे का ढेर एक गंभीर समस्या है। पर्यटकों द्वारा फेंका गया कूडा-करकट, प्लास्टिक की थैलियाँ, कप, ग्लास, बोतलें आदि से भीमबेटका, देलावाडी, अपरलेक, चोरल, रालामंडल आदि प्राकृतिक केन्द्र अपने सौन्दर्य को खोते जा रहे हैं। धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर भी प्रदूषण जनित समस्याएँ सर्वाधिक परिलक्षित हुई हैं। महाकाल, कालभैरव, चामुण्डा टेकरी, पशुपतिनाथ, बगुलामुखी, नेमावर, नागदा आदि पर्यटन केन्द्रों में स्वच्छता का अभाव है, क्योंकि मंदिरों व तीर्थस्थलों के आस-पास श्रद्धालुओं द्वारा भगवान के चढ़ावे से सर्वाधिक गंदगी होती है। अतः मालवा प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन में न केवल शिक्षा और सक्रियता का स्तर बढ़ा सकते हैं बल्कि उन्हें संरक्षण के लिए अधिक उत्साही और प्रभावकारी

एजेंट भी बना सकते हैं। यदि मालवा में प्राकृतिक केन्द्रों में व्याप्त प्रदूषण संबंधित समस्याओं का सही ढंग से समाधान ढूंढा जाय तो निःसंदेह पर्यटकों को पर्यटन केन्द्र पर कुछ और दिनों तक रोका जा सकता है व मालवा पर्यटन के क्षेत्र में एक नये रूप में उभर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 Lindsay, J.J. 1985. Carrying Capacity for Tourism Development in National Parks of the United States, I&E9 (1): 17-20.

2 Lascurian- Ceballos, 1987. The Future of Ecotourism Mexico; Journal, January. P.13.

3 दिक्षित के. के. गुप्ता जे.पी, 2003 ए पर्यटन के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली